❀ श्रीः ❀

आचार्यग्रन्थमाला—५४

॥ श्री सूक्तम् ॥

हिन्दी अनुवाद तथा अनुशीलन समेत



अनुवादक—
रा घ वा चा र्य



मूल्य—२० नये पैसे

माघ सं० २०१७ प्रथम संस्करण, १०००
ज्येष्ठ सं० २०१८ द्वितीय संस्करण, २०००

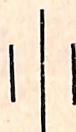
सन् १९६१ } 卐 { संवत् २०१८

❀ श्रीः ❀

आचार्यग्रन्थमाला—५४

॥ श्रीसूक्तम् ॥

हिन्दी अनुवाद तथा अनुशीलन समेत



अनुवादक—

रा घ वा चा र्य



मूल्य—२० नये पैसे

माघ सं० २०१७ प्रथम संस्करण, १०००

ज्येष्ठ सं० २०१८ द्वितीय संस्करण, २०००

सन् १९६१ } 卐 { संवत् २०१८

❀ श्रीः ❀

॥ श्रियै नमः ॥



※ विषय-सूची ※

श्रीसूक्त : अनुशीलन

श्रीसूक्त—श्रीसूक्त ऋग्वेद का खिल सूक्त है। ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के अन्त में यह उपलब्ध होता है। सूक्त में मन्त्रों की संख्या पन्द्रह है। सोलहवें मन्त्र में फलश्रुति है। बाद में ग्यारह मन्त्र परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनको लक्ष्मीसूक्त के नाम से स्मरण किया जाता है।

ऋषि—आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत ये चार श्रीसूक्त के ऋषि हैं। इन चारों को श्री का पुत्र बताया गया है। श्रीपुत्र हिरण्यगर्भ को भी श्रीसूक्त का ऋषि माना जाता है।

छन्द—चौथा मन्त्र बृहती छन्द में है। पांचवाँ और छटा मन्त्र त्रिष्टुप छन्द में है। अन्तिम मन्त्र का छन्द प्रस्तारपंक्ति है। शेष मन्त्र अनुष्टुप छन्द में है।

देवता—श्रीशब्दवाच्या लक्ष्मी इस सूक्त की देवता हैं।

विनियोग—इस सूक्त का विनियोग लक्ष्मी के आराधन, जप, होम आदि में किया जाता है। महर्षि बोधायन, वशिष्ठ आदि ने इसके विशेष प्रयोग बतलाये हैं। श्रीसूक्त की फलश्रुति में भी इस सूक्त के मन्त्रों का जप तथा इन मन्त्रों के द्वारा होम करने का निर्देश किया गया है।

आराधनाक्रम में श्रीसूक्त के पन्द्रह मन्त्रों का इस क्रम से विनियोग किया जाता है—

१–आवाहन	६–स्नान	११–धूप
२–आसन	७–वस्त्र	१२–दीप
३–पाद्य	८–भूषण	१३–नैवेद्य
४–अर्घ्य	९–गन्ध	१४–प्रदक्षिणा
५–आचमन	१०–पुष्प	१५–उद्वासन

विषय—श्रीसूक्त के मन्त्रों का विषय इस प्रकार है—

१–भगवान से लक्ष्मी को अभिमुख करने की प्रार्थना
२–भगवान् से लक्ष्मी को अभिमुख रखने की प्रार्थना
३–लक्ष्मी से सान्निध्य के लिये प्रार्थना
४–लक्ष्मी का आवाहन
५–लक्ष्मी की शरणागति एवं अलक्ष्मीनाश की प्रार्थना
६–अलक्ष्मी और उसके सहचारियों के नाश की प्रार्थना
७–माङ्गल्यप्राप्ति की प्रार्थना
८–अलक्ष्मी और उसके कार्यों का विवरण देकर उसके नाश की प्रार्थना
९–लक्ष्मी का आवाहन
१०–मन, वाणी आदि की अमोघता तथा समृद्धि की स्थिरता के लिये प्रार्थना
११–कर्दम प्रजापति से प्रार्थना
१२–लक्ष्मी के परिकर से प्रार्थना

१३–लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिये पुनः भगवान् से प्रार्थना
१४–पुनः लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिये भगवान् से प्रार्थना
१५–भगवान् से लक्ष्मी के आभिमुख्य की प्रार्थना
१६–फलश्रुति

परिशिष्ट (लक्ष्मीसूक्त) के मन्त्रों के विषय हैं—

१–सौख्य की याचना
२–समस्त कामनाओं की पूर्ति की याचना
३–सान्निध्य की याचना
४–समृद्धि के स्थायित्व के लिये प्रार्थना
५–देवताओं में लक्ष्मी के वैभव का विस्तार
६–सोम की याचना
७–मनोविकारों का निषेध
८–लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये प्रार्थना
९–लक्ष्मी की वन्दना
१०–लक्ष्मीगायत्री
११–अभ्युदय के लिये प्रार्थना

श्रीदेवी के नाम—श्रीसूक्त के मन्त्रों में श्री लक्ष्मी के ये नाम मिलते हैं—

१–हिरण्यवर्णा, हरिणी, सुवर्णरजतस्रजा, चन्द्रा, हिरण्मयी, लक्ष्मी
२–अनपगामिनी
३–अश्वपूर्वा, रथमध्या, हस्तिनादप्रबोधिनी, श्री, देवी

४–का, सोऽस्मिता, हिरण्यप्राकारा, आर्द्रा, ज्वलन्ती, तृप्ता, तर्पयन्ती, पद्मे स्थिता, पद्मवर्णा

५–प्रभासा, यशसा ज्वलन्ती, देवजुष्टा, उदारा, पद्मनेमि

६–आदित्यवर्णा

७–८

९–गन्धद्वारा, दुराधर्षा, नित्यपुष्टा, करीषिणी, ईश्वरी

१०–

११–माता, पद्ममालिनी

१२–

१३–पुष्करिणी, यष्टि, पिङ्गला,

१४–पुष्टि, सुवर्णा, हेममालिनी, सूर्या

१५–१६

परिशिष्ट के ग्यारह मन्त्रों में ये नाम और मिलते हैं—

१–पद्मानना, पद्मोरू, पद्माक्षी, पद्मसम्भवा

२–अश्वदायी, गोदायी, धनदायी, महाधना,

३–पद्मविपद्मपत्रा, पद्मप्रिया, पद्मदलायताक्षी, विश्वप्रिया, विश्वमनोनुकूला

४–७

८–सरसिजनिलया, सरोजहस्ता, धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभा, भगवती, हरिवल्लभा, मनोज्ञा, त्रिभुवनभूतिकारी

९–विष्णुपत्नी, क्षमा, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युतवल्लभा

१०–महादेवी, विष्णुपत्नी

११–

श्रीतत्त्व—ऊपर जो नाम गिनाये गये हैं उनके प्रकाश में श्रीदेवी के स्वरूप, रूप, गुण, वैभव आदि का अनुभव इस प्रकार किया जा सकता है।

नाम—श्रीदेवी के दो प्रमुख नाम हैं 'श्री' और 'लक्ष्मी'। 'श्री' नाम से प्रकट होता है—

१–सम्पूर्ण जगत् लक्ष्मी के अधीन है।

२–वे भगवान् की सेवा करती हैं।

३–वे आश्रितजनों की पुकार सुनती हैं।

४–वे आश्रितजनों की पुकार को भगवान् तक पहुँचाती हैं।

५–वे आश्रितजनों के मार्ग में आने वाली सारी बाधाओं को मिटाती हैं।

६–वे आश्रितजनों को समस्त गुणों से सम्पन्न करती हैं।

'लक्ष्मी' शब्द से प्रकट होता है—

१–वे जगत् के रूप में परिलक्षित होती हैं।

२–सभी देवता, मुनि आदि उनकी प्रार्थना करते हैं।

३–वे समस्त ऐश्वर्यों की स्वामिनी हैं।

स्वरूप—लक्ष्मी प्रकाशमयी (देवी) हैं। वे सुखस्वरूपा (का) हैं और आनन्दमयी (चन्द्रा) हैं। वे सूर्या हैं अर्थात् सर्वेश्वर के समान समस्त चेतनों एवं अचेतन पदार्थों का व्यापन, भरण एवं

पोषण करने वाली हैं। वे समस्त भूतों की अर्थात् प्राणियों की ईश्वरी हैं।

रूप—लक्ष्मी का वर्ण (रंग) पद्म, हिरण्य एवं आदित्य जैसा है। उनका मुख, उनके नेत्र और उनके जंघे कमल जैसे हैं। वे पद्म की, स्वर्ण को एवं चाँदी की माला धारण किये हैं। उनका प्राकट्य कमल से हुआ है। वे कमल में स्थित हैं। उनके करकमल कमल से सुशोभित हैं। कहना न होगा कि कमल शान्ति, दिव्यता एवं आनन्द का प्रतीक है।

गुण—वे भगवती हैं अर्थात् ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति और तेज की निधान हैं। वे दयामयी हैं। क्षमा और उदारता उनके गुण हैं।

विष्णुपत्नी—भगवान् श्रियःपति हैं और वे विष्णुपत्नी हैं। भगवान् का ज्ञान स्वतःसिद्ध है अतः वे जातवेद कहलाते हैं। वे देवताओं के सखा हैं। लक्ष्मी माधवप्रिया हरिवल्लभा अच्युतवल्लभा हैं। लक्ष्मी और नारायण दिव्य-दम्पती हैं। दोनों ही उपाय एव प्राप्य हैं।

साधना—श्रीसूक्त में लक्ष्मी की प्रार्थना, स्तुति एवं शरणागति है। लक्ष्मी की शरणागति ग्रहण कर प्रार्थना एवं स्तुति करने से साधक को समस्त पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं।

श्रीः

॥ श्रीसूक्तम् ॥

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

जातवेदः	—लक्ष्मीपते !
हिरण्यवर्णां	—(१) स्वर्ण के समान कान्तिमती
	(२) हितैषिणी एवं रमणीय
हरिणीं	—(१) हरिणीरूपधारिणी
	(२) पापहारिणी
सुवर्णरजतस्रजाम्	—(१) स्वर्ण एवं रजत की माला धारण करने वाली
	—(२) सुनहरी और सफेद फूलों की माला धारण करने वाली
	—(३) सूर्य एवं चन्द्र की माला धारण करने वाली
चन्द्रां	—(१) आह्लादित करने वाली
	(२) चन्द्रमाके समान प्रकाशमान
हिरण्मयीं	—(१) हिरण्यस्वरूपा
	(२) हिरण्य आदि सारी सम्पत्ति की स्वामिनी

लक्ष्मीं —लक्ष्मी को
म आवह —मेरे अभिमुख करें ।

लक्ष्मीपते ! आप उन लक्ष्मी को मेरे अभिमुख करें जो हितैषिणी एवं रमणीय हैं, समस्त पापों को नाश करने वाली हैं, अनुरूप माला आदि आभरणों से युक्त हैं, सब को प्रसन्न करने वाली हैं तथा हिरण्य आदि समस्त सम्पत्ति की स्वामिनी हैं ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

जातवेदः —लक्ष्मीपते !
तां —उन
अनपगामिनीं —(१) नित्य सान्निध्य से अनुग्रह करने वाली
(२) विष्णु का नित्य अनुगमन करने वाली
लक्ष्मीं —लक्ष्मी को
म आवह —मेरे अभिमुख करो
यस्यां —जिनका सान्निध्य होने पर
अहम् —मैं
हिरण्यं —(१) स्वर्ण
(२) स्वर्ण आदि धातु सम्पत्ति
गां —(१) गौ (२) पृथ्वी (३) पशुधन

अश्वं —(१) अश्व, (२) वाहन
पुरुषान् —पुत्र, पौत्र, मित्र आदि परिजन
विन्देयम् —प्राप्त करूँ ।

लक्ष्मीपते ! आपका नित्य अनुगमन करनेवाली तथा भक्तों पर अनुग्रह करने वाली लक्ष्मी को आप मेरे अभिमुख करें, जिनके सान्निध्य से मैं धातु सम्पत्ति, पशुधन और पुत्र, पौत्र आदि परिजन प्राप्त कर सकूँ ।।२।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।३।।

अश्वपूर्वां —(१) प्रयाण के समय अश्वपंक्ति को मध्य में रखने वाली
(२) सर्वव्यापी भगवान्‌को अग्र-गामी बनाये रखने वाली

रथमध्यां —(१) प्रयाण के समय रथपंक्ति को मध्य में रखने वाली
(२) शरीर के मध्य हृदय में निवास करने वाली
(३) भगवान् के वक्षःस्थल में निवास करने वाली

हस्तिनादप्रबोधिनीम् —(१) गजनिनाद से आगमन को सूचित करने वाली
(२) गजेन्द्र आदि के आर्तनाद से द्रवित होने वाली

श्रियं देवीं —लक्ष्मी देवी का
उपह्वये —सान्निध्य प्राप्त करता हूँ
सा श्रीः देवी —वह लक्ष्मी देवी
मा जुषताम् —मुझ पर प्रसन्न हों ।

मैं उन लक्ष्मी का सान्निध्य प्राप्त करता हूँ जो सर्वव्यापी भगवान् को अग्रगामी बनाये रखती हैं, जीवों के हृदय में तथा भगवान् के वक्षःस्थल में निवास करती हैं तथा गजेन्द्र आदि आश्रित जनों के आर्तनाद पर द्रवित होती हैं । वह लक्ष्मी देवी मुझ पर प्रसन्न हों ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां त्वामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

कां —(१) वाणी और मन के लिये अगोचर
(२) सुखस्वरूपा
सोस्मितां —मुस्कराती हुई
हिरण्यप्राकारां —(१) स्वर्णमय आकार से युक्त
(२) स्वर्ण भवन में निवास करने वाली
आर्द्रां —(१) दिशागजों के द्वारा स्नान कराये जाने से आर्द्र
(२) समुद्र से प्रकट होने के कारण आर्द्र

(३) आर्द्रा नक्षत्र में अवतीर्ण
(४) दयार्द्र

ज्वलन्तीं —(१) सदा प्रकाशमान
(२) प्रकाशित करने वाली

तृप्तां —पूर्णकाम

तर्पयन्तीं —(१) भक्त जनों को तृप्त करने वाली
(२) त्रिविध तापों से तप्त प्राणियों को प्रसन्न करने वाली

पद्मे स्थितां —कमलवासिनी

पद्मवर्णां —पद्मवर्णा

तां श्रियं —उन लक्ष्मी को

इह उपह्वये —(मैं) यहाँ आह्वान करता हूँ

जो सुखस्वरूपा, मन्द मन्द मुस्कराने वाली, स्वर्णभवन में विराजमान, दयार्द्र, प्रकाशजननी, पूर्णकाम, भक्तों को तृप्त करने वाली, कमलवासिनी एवं पद्मवर्णा हैं, उन लक्ष्मी देवी का मैं यहाँ आह्वान करता हूँ ।।४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।५।।

अहम् —(अकिञ्चन और उपायान्तर शून्य) मैं

चन्द्रां —(१) चन्द्रमाकेसमानकान्तिवाली

	(२) आनन्दस्वरूप
प्रभासां	—(१) प्रकाशमयी (२) दिव्य-मंगलविग्रहा (३) प्रकाश करनेवाली
यशसा ज्वलन्तीं	—(१) यश से दीप्त (२) यशस्वी बनानेवाली
लोके	—लीलाविभूति और नित्यविभूतिमें
देवजुष्टाम्	—(१) देवताओं के द्वारा सूपूजित (२) भगवान् नारायणकी प्रेयसी
उदाराम्	—उदारशीला
पद्मनेमिं	—(१) कमल में विराजमान (२) हस्तगत कमल के द्वारा भक्त जनों को लक्ष्य प्राप्त कराने वाली
तां श्रियं	—उन श्रीशब्दवाच्य लक्ष्मी की
शरणं प्रपद्ये	—शरण ग्रहण करता हूँ
मे अलक्ष्मीः	—(१) मेरी दरिद्रता (२) मेरा अज्ञान
नश्यताम्	—नष्ट हो जाय
त्वां वृणे	—(मैं) आपको शरण्य के रूप में वरण करता हूँ।

मैं उन लक्ष्मी की शरण ग्रहण करता हूँ जो आनन्द स्वरूपा हैं, जिनका रूप दिव्य एवं मंगलमय है, जिनका यश

सर्वविदित है, जो इस संसार में देवताओं के द्वारा सुपूजित तथा नित्यविभूति में नित्य पार्षदों एवं मुक्तजनों की पूज्य हैं, जो उदारशीला हैं तथा जो कमल में निवास करती हैं। मेरा अज्ञान नष्ट हो जाय इसलिये मैं लक्ष्मी को शरण्य के रूप में वरण करण करता हूँ ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु
मायान्तरायाश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥६॥

आदित्यवर्णे	—(१) सूर्य के समान कान्तिमती ! (२) 'अ' शब्द वाच्य विष्णु से कान्ति को प्राप्त करनेवाली
वनस्पतिः	—वृक्षों का पति
विल्वो वृक्षः	—विल्व वृक्ष
तव तपसोऽधिजातः	—आपके संकल्प से उत्पन्न हुआ।
तस्य फलानि	—उसके फल
तपसा	—(१) हमारी तपस्या के द्वारा (२) आप की कृपा से
बाह्याः	—लक्ष्मी विरोधी
माया	—अज्ञान एवं दुष्प्रवृत्ति
अन्तरायाः	—काम क्रोध लोभ मोह आदि विघ्नों को
अलक्ष्मीः	—(१) दरिद्रता आदि दोषों को

(२) अलक्ष्मी एवं उनके सह-
चारियों को

नुदन्तु —नष्ट करें।

पाठभेद (१) मायान्तरायाश्च
(२) ममान्तरायाश्च—मेरे विघ्न
(३) या आन्तरा याः च बाह्या—जो आन्तरिक एवं बाह्य

आदित्यवर्णे ! आपके संकल्प से वृक्षों का पति बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। आपही की कृपा से उसके फल आपके विरोधी अज्ञान, काम क्रोध आदि विघ्नों तथा अलक्ष्मी और उनके सहचारियों को नष्ट करें ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिवृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे लक्ष्मि

देवसखः —(१) भगवान् नारायण
(२) महादेव का सखा कुबेर

कीर्तिश्च —(१) कीर्ति
(२) कीर्ति का अभिमानी देवता

मणिना सह —(१) चिन्तामणि के साथ
(२) रत्नों के साथ
(३) मणिभद्रकोषाध्यक्ष के साथ

उपैतु —(मुझे) प्राप्त हो।

अस्मिन् राष्ट्रे	—मैं इस राष्ट्र में
प्रादुर्भूतोऽस्मि	—(१) उत्पन्न हुआ हूँ
	—(२) प्रबुद्ध हुआ हूँ
कीर्तिवृद्धि	—कीर्तिवृद्धि को
मे ददातु	—मुझे प्रदान करें

(पाठभेद) देवसखः=देवि सह, कीर्तिवृद्धिं=कीर्तिमृद्धि

देवि सह	—हे देवि ! आप भगवान के साथ
कीर्तिमृद्धि	—कीर्ति और ऋद्धि को

लक्ष्मिदेवि ! भगवान् नारायण कीर्ति और चिन्तामणि रत्न के साथ मुझे प्राप्त हों। मैं इस राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ। लक्ष्मी कीर्तिवृद्धि मुझे प्रदान करें ॥७॥

क्षुत्पिपासां मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

अहम्	—मैं
क्षुत्पिपासां	—क्षुधा पिपासा
मलां	—मल एवं
ज्येष्ठां	—दुस्सह की भार्या
अलक्ष्मीं	—अलक्ष्मी का
नाशयामि	—निवारण चाहता हूं
	हे लक्ष्मि देवि !
अभूतिं	—अनैश्वर्यं
असमृद्धि	—असमृद्धि को

मे गृहात् —मेरे गृह से
निर्णुद —दूर करें।

(पाठभेद) क्षुत्पिपासां मलां =क्षुत्पिपासामलां

हे देवि ! मैं क्षुधा, पिपासा, मलिनता एवं दुस्सह की पत्नी अलक्ष्मी का निवारण चाहता हूँ। आप अनैश्वर्य एवं असमृद्धि को मेरे गृह से दूर करें ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

गन्धद्वारां —(१) गन्ध पुष्प धूप दीप आदि के द्वारा प्रसन्न होने वाली
(२) यशप्रदात्री
(३) पृथ्वीस्वरूपा

दुराधर्षां —(१) साधनहीन पुरुषों को प्राप्त न होने वाली
(२) किसी से नष्ट न होने वाली

नित्यपुष्टां —(१) सर्वदा समृद्ध
(२) सदा अन्न आदि से सम्पन्न

करीषिणीं —(१) गोबर से उपलक्षित पशु-समृद्धि से सम्पन्न
(२) गोबर के मांगलिक होने के कारण मङ्गलमयी

सर्वभूतानां ईश्वरीं —समस्त प्राणियों की अधीश्वरी

तां श्रियं	—उन लक्ष्मी का
उपह्वये	—यहाँ आह्वान करता हूँ ।

मैं उन लक्ष्मी का यहाँ आह्वान करता हूँ जो यशप्रदात्री हैं, साधनाहीन पुरुषों को प्राप्त न होने वाली हैं सर्वदा समृद्ध मङ्गलमयी एवं समस्त प्राणियों की अधीश्वरी हैं ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

श्रीः	—हे लक्ष्मि !
मनसः कामम्	—मन की कामना
आकूतिं	—बुद्धि का संकल्प
वाचः	—वाणी की प्रार्थना के अनुसार
पशूनां रूपं	—जीवधन समृद्धि
अन्नस्य रूपं	—अन्न समृद्धि
सत्यं	—सुस्थिर हो
अशीमहि	—ऐसी अभिलाषा है
मयि	—मुझे
यशः	—यश
श्रयतां	—प्राप्त हो

हे लक्ष्मि ! मन की कामना, बुद्धि का संकल्प, वाणी की प्रार्थना, जीवधन समृद्धि, अन्न समृद्धि सुस्थिर हो, ऐसी अभिलाषा है । मुझे यश प्राप्त होवे ॥१०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

कर्दम —हे कर्दम प्रजापते !
कर्दमेन प्रजाभूता —(१) आपके द्वारा सन्तान के रूप में स्वीकृत
(२) आप जिन की प्रजा हैं
श्रियं —लक्ष्मी की
मयि —मेरे यहाँ
संभव —प्रतिष्ठित करें
पद्ममालिनीं —पद्ममाला धारण करने वाली
मातरं —माता लक्ष्मी को
मे कुले —मेरे कुल में
निवासय —प्रतिष्ठित करें ।

कर्दम प्रजापते ! उन लक्ष्मी को मेरे यहां प्रतिष्ठित करें जिनको आपने कन्या के रूप में स्वीकार किया है । पद्ममाला धारण करने वाली उन माता लक्ष्मी को मेरे कुल में प्रतिष्ठित करें ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

चिक्लीत —(१) भगवान् के अन्तःपुर के द्वारपाल चिक्लीत !
(२) लक्ष्मी के पुत्र चिक्लीत कामदेव !

आपः	—भगवान् के आयतन भूत जल
स्निग्धानि	—घृत आदि को
मम गृहे	—मेरे गृह में
सृजन्तु	—उत्पन्न करें
मे गृहे	—(आप) मेरे गृह में
वस	—निवास करें।
च	—और
देवीं	—देवी (प्रकाशमयी)
मातरं श्रियं	—माता लक्ष्मी को
मम कुले	—मेरे कुल में
निवासय	—निवास करावें।

चिक्लीत ! भगवान् के आयतनभूत जल, घृत आदि को मेरे गृह में उत्पन्न करें। आप मेरे गृह में निवास करें और प्रकाशमयी माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास करावें ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममाऽऽवह ॥१३॥

जातवेदः	—(१) लक्ष्मीपते ! (२) अग्ने !
आर्द्रां	—आर्द्र हृदया
पुष्करिणीं	—कमलवासिनी
यष्टिं	—(१) यज्ञस्वरूपा
	(२) दण्डधारिणी
पिङ्गलां	—पिङ्गलवर्णा

पद्ममालिनीं —कमलों की माला धारण करने वाली

चन्द्रां —(१) आह्लादित करने वाली
(२) चन्द्रमा के समान प्रकाशमान

हिरण्मयीं —हिरण्य (स्वर्ण) आदि की स्वामिनी

लक्ष्मीं —लक्ष्मी को

मम आवह —मेरे अभिमुख करें।

पाठभेद यष्टि=पुष्टि —पुष्टि

लक्ष्मीपते ! उन लक्ष्मी को अभिमुख करें जिनका हृदय आर्द्र है, जो कमल में निवास करती हैं, जो यज्ञस्वरूपा हैं, पिङ्गलवर्णवाली हैं, भक्तजनों को आह्लादित करने वाली हैं तथा स्वर्ण आदि की स्वामिनी हैं ॥१३॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममाऽऽवह ॥१४॥

जातवेदः —लक्ष्मीपते !

आर्द्रां —आर्द्र हृदया

पुष्करिणीं —कमलवासिनी

पुष्टिं —पुष्टिस्वरूपा

सुवर्णां —(१) स्वर्णमयी
(२) दिव्यस्वरूपा

हेममालिनीं —स्वर्णपुष्पों की माला धारण करने वाली

सूर्या —(१) सर्वेश्वर के समान समस्त चेतनों एवं अचेतन पदार्थों का व्यापन भरण एवं पोषण करने वाली
(२) सूर्यरूपिणी

हिरण्मयीं —हिरण्य आदि की स्वामिनी

लक्ष्मीं —लक्ष्मी को

मम आवह —मेरे अभिमुख करें।

हे लक्ष्मीपते ! उन लक्ष्मी को मेरे अभिमुख करें जिनका हृदय आर्द्र है, जो कमल में निवास करती हैं, जो पुष्टिस्वरूपा हैं, स्वर्णमयी हैं, स्वर्णपुष्पों की माला धारण करने वाली हैं, जो आपके समान समस्त चेतनों एवं अचेतन पदार्थों का व्यापन भरण एवं पोषण करने वाली हैं तथा जो हिरण्य आदि की स्वामिनी हैं ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो
लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

जातवेदः —लक्ष्मीपते !

तां —उन

अनपगामिनीं —विष्णु का नित्य अनुगमन करने वाली

लक्ष्मीं	—लक्ष्मी को
म आवह	—मेरे अभिमुख करें
यस्यां	—जिनका सान्निध्य होने पर
प्रभूतं	—अपार
हिरण्यं	—(१) स्वर्ण
	(२) स्वर्ण आदि धातुसम्पत्ति
गाव:	—पशुधन
दास्य:	—सेवक-सेविकायें
अश्वान्	—अश्व आदि वाहन
पुरुषान्	—पुत्र पौत्र आदि
विन्देयम्	—प्राप्त करूँ

लक्ष्मीपते ! आपका नित्य अनुगमन करने वाली लक्ष्मी को आप मेरे अभिमुख करें जिनके सान्निध्य से मैं अपार धातु सम्पत्ति, पशुधन, सेवक-सेविकायें, अश्व आदि वाहन सम्पत्ति तथा पुत्र पौत्र आदि प्राप्त करूँ ॥१५॥

यश्शुचि: प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकाम: सततं जपेत् ॥१६॥

जिस व्यक्ति को लक्ष्मी के अनुग्रह की कामना हो वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन घृत से होम करे और उसके साथ उपर्युक्त १५ ऋचाओं का निरन्तर पाठ करे ॥१६॥

———

परिशिष्ट—

लक्ष्मी सूक्तम्

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१॥

हे लक्ष्मि ! आपका मुख कमल के समान है, आपके जंघे व नेत्र कमल के समान हैं । आपका प्रादुर्भाव कमल में हुआ है । आप मुझ पर कृपा करें जिससे कि मैं सुख प्राप्त करूँ ।

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥२॥

हे देवि ! आप अश्व, गौ एवं धन देने वाली हैं । हे सर्वेश्वर ! मुझे धन प्रदान करें तथा मेरी समस्त कामनायें पूर्ण करें ।

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे
पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥३॥

हे लक्ष्मि ! आपका मुख कमल के समान है, आप कमल पर निवास करती हैं, कमल आपको प्यारा है, कमलदल के

समान आप के नेत्र हैं, आप विश्व पर कृपा करती हैं और विश्वशब्दवाच्य भगवान् के अनुकूल रहती हैं। अपने चरण-कमल को मेरे हृदय में प्रतिष्ठित करें।

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम्।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥४॥

हे लक्ष्मि ! आप समस्त प्रजा की माता हैं। पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़े आदि एवं गोरथ इन सबको मेरे लिये चिरस्थायी करें।

धनमग्निर्धनं वायुः धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु ते ॥५॥

हे लक्ष्मि ! अग्नि, वायु, सूर्य अष्टवसु, इन्द्र, वृहस्पति एवं वरुण तुम्हारी सम्पत्ति हैं।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥६॥

वैनतेय सोमपान करें। इन्द्र सोमपान करें। मुझ माता लक्ष्मी के कृपापात्र को भगवान् सोम प्रदान करें।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥७॥

पुण्यशील भक्तजनों को क्रोध, मात्सर्य, लोभ एवं अशुभ विचार नहीं होता। अत: श्रीसूक्त का जप कर्तव्य है।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतकरि प्रसीद मह्यम् ॥८॥

हे भगवति ! आप कमल में वास करती हो, आपके हाथों में कमलपुष्प हैं, आप अति श्वेतवस्त्र, चन्दन एवं माला से सुशोभित हो, आप भगवान् की प्रेयसी हो, सुन्दर हो तथा त्रिलोकी को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो, आप मुझ पर प्रसन्न हों।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥९॥

हे लक्ष्मि ! आप विष्णु पत्नी हैं, दयामयी हैं, प्रकाशमयी हैं, माधव की प्रिया माधवी हैं, लक्ष्मी हैं, विष्णु की प्रिय संगिनी हैं विष्णु की प्रेयसी हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

महादेव्यै च विद्महे, विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥

हम महादेवी का ज्ञान प्राप्त करते हैं, विष्णुपत्नी का ध्यान करते हैं, वह लक्ष्मी हमारी बुद्धि को भगवान् की ओर प्रेरित करें।

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥११॥

श्रीशब्दवाच्या लक्ष्मी तेज, आयु, आरोग्य, धान्य, धन पशु अनेक सन्तान एवं सौ वर्ष का दीर्घ जीवन मुझे प्रदान करें ।

सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक
राघवाचार्य

प्रकाशक	मुद्रक
आचार्यपीठ	आचार्यप्रेस

बरेली (उत्तरप्रदेश)